DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

रस-2

LIVE 01-05-2024 09:00 AM

(1)- **श्रृंगार रस** ⇒ श्रृंगार रस को रसराज / रसपति के नाम से भी जाना जाता है। जब विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रति नामक स्थायी भाव उत्पन्न होता है। उसे श्रृंगार रस कहते हैं।

श्रृंगार रस दो प्रकार के होते हैं-

(i)- **संयोग श्रृंगार रस** ⇒ जहाँ नायक और नायिका के मिलन या संयोग का वर्णन होता है वहाँ संयोग श्रृंगार रस होता है।

उदा॰ बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाए
सौंह करे, भौंहनि हँसे, देन कहे नटि जाए ॥

श्रीकृष्ण
गोपी

(ii)- कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत लजियात ।
भरे भौंन में करत है नैनहुं ही सो बात ॥ नायक – नायिका

भौंन ↓ भवन(सभा)

नैनहुं ↓ आँखों ही आँखों में बात करना

(iii)- है कनक-सा रंग तेरा, सुर्ख फूलों से अधर – होंठ
देख लूं सूरत पिय की भूल जाऊं डगर ॥

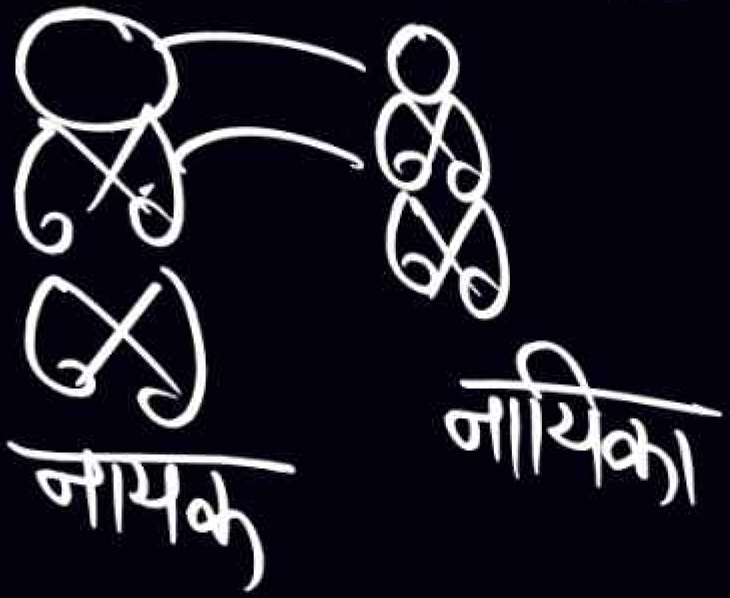

(ii)- वियोग श्रृंगार रस ⇒ जहाँ वियोग की अवस्था में नायक और नायिका के प्रेम का वर्णन होता है। वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता है।

↓
बिछड़ने के बाद
प्रेम का वर्णन

नायक ✓ नायिका X
नायिका ✓ नायक X

(i)- हे खग मृग, हे मधुकर श्रेणी।
तुम देखी सीता मृगनयनी ॥

नायक - राम
नायिका - सीता X

(ii)- अँखिया हरि दरसन की भूखी।

(iii)- निसि दिन बरसत नैन हमारे
सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जब ते स्याम सिधारे ॥

नायक - श्याम X
नायिका - गोपी

② - हास्य रस ⇒ किसी व्यक्ति के विकृत रूप, वेश भूषा आदि को देखकर हास्य भाव उत्पन्न होता है वहाँ हास्य रस होता है।

स्थायी भाव - हास

(i) - इत आवत चलिजात उत, चलि छ-सातक हाथ।
चढ़ी हिंडोले-सी रहे, सासनु सास उसास ॥ (बिहारी)

नायिका → कमजोर → साँस लेना

(ii) - विन्ध्य के वासी उदासी, तपोव्रत धारी महा बिनु नारि दुखारे
गौतमतीय तरी तुलसी सो, कथा सुनि भे मुनिवृन्द सुखारे
ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे
कीन्ही भली रघुनायक जू, जो कृपा करि कानन को पगु धारे ॥

(iii)- जब धूमधाम से जाती बरात किसी की सजधज कर
मन करता धक्का दे दुल्हे को जा बैठूं घोड़े पर
सपने में ही मुझको अपनी शादी होती दिखती है

(iv)- आधा पात बबूल का, तामे तनिक पिसान ।
लाला जी करने लगे छठे समासे दान ॥